



भारत का गज़त्र The Gazette of India

असाधारण EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (१)
PART II—Section 3—Sub-section (1)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

367]

No. 367] NEW DELHI, TUESDAY, SEPTEMBER 8, 1992/BHADRA 17, 1914

मौज़िली, मंगलवार, सितम्बर 8, 1892/भाद्र 17, 1914

ਇਹ ਭਾਵ ਹੈ ਕਿਸੇ ਪ੍ਰਕਾਰ ਵੀ ਯਾਤ੍ਰੀ ਹੁੰਦਿ ਰਿਹਾ ਹੈ ਕਿ ਵਾਸਤੇ ਕਿ ਵਾਸਤੇ ਵੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਕਿਸੇ ਵੀ ਵਾਸਤੇ ਵੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकारण

(प्रधान स्थायी पीठ)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 8 मित्रभर, 1992

मा. का नि. 757 (भ) .—केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण, प्रशासनिक अधिकरण अधिनियम, 1985 (1985 का 13) की धारा 17 के साथ पठित न्यायालय अवमान अधिनियम, 1971 (1971 का 70) की धारा 23 द्वारा प्रदल गणितयों और इस नियित उसे समर्थ बनाने वाली सभी मन्त्र शिवितयों का प्रयोग करते हुए और इस विषय पर मधी नियमों को अधिकारात करते हुए, उक्त अधिनियम के अधीन कार्यवाहियों का विनियमन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाता है, मर्यादा—

1. महिला नाम और प्रारम्भ -- (1) इन निप्रमो का महिला नाम न्यायालय अधिकारी (के.प्र.अ.) नियम, 1992 है ।

(2) में राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रधान होगे।

2 परिभाषाः—इन नियमों में जब एक कि विषय वा संबंध से कोई बात इसके विश्वास न हो—

(क) "अधिनियम" से न्यायालय प्रबन्धान अधिनियम, 1971 1971 का 70) अधिनियम है,

(ख) "सहिता" से इड प्रक्रिया सहिता अधिनियम है;

(ग) "प्रस्तु" से इन नियमों के परिणाम में उत्तराधिकार प्रका अधिनियम है,

(घ) "सदस्य" से न्यायिक या प्रशासनिक सदस्य अधिनियम है जिसमें उत्तराधिकार और प्रशासन या सम्बोधित है।

(ङ) "रजिस्ट्रार" से केंद्रीय प्रशासनिक अधिकारण या उसके उच्च न्यायपीठ का रजिस्ट्रार अधिनियम है जहाँ प्रशासन कार्यवाहिका की जानी है और इसमें सम्पूर्ण रजिस्ट्रार और उप रजिस्ट्रार तथा रजिस्ट्रार के कर्तव्यों का निर्वहन करने के लिए प्राविधिक प्रनुभाव अधिकारी भी सम्मिलित हैं,

(च) "धारा" से अधिनियम की कोई धारा अधिनियम है,

(छ) "अधिकारण" से प्रशासनिक अधिकारण अधिनियम, 1985 के अधीन गठित केंद्रीय प्रशासनिक अधिकारण या उसकी वह न्यायीठ अधिनियम है, जहाँ कार्यवाहिकों का सजान किया जाता है,

(म) उन शब्दों और पदों के, जो इन नियमों में परिभासित नहीं हैं, वहाँ प्रबन्ध होंगे जो उनके प्रधिनियम में हैं।

3. प्रस्ताव का ब्रह्मणः—धर्मिकरण के अवमान के लिए कार्रवाई आरम्भ करने का प्रत्येक प्रस्ताव, विविध प्रबन्धान की बाबत “प्रबन्धान वाचिका (विविका)” और आपराधिक प्रबन्धान की बाबत “प्रबन्धान वाचिका (आपराधिक)” के रूप में वर्णित वाचिका में होगा।

4. कार्यवाहिकों के प्रबन्धानः—वाचिका प्रस्तुत करने वाले प्रबन्धान को “वाची” के रूप में और प्रधिकरित प्रबन्धानकर्ता को “प्रधियो” के रूप में वर्णित किया जाएगा।

5. वाचिका की विवरणस्तु—वाचिका में निम्नलिखित विविधियाँ होंगी:—

(1) (क) निम्नलिखित के नाम (जिसमें, जहाँ तक सम्भव हो) पिता/माता/पति का नाम और भायु भी सम्मिलित किए जाएंगे) उपचारिका और पता

(i) वाची; और

(ii) प्रत्यक्षी

यदि प्रधिकरित प्रबन्धानकर्ता कोई प्रधिकारी है तो उसका वर्णन नाम और प्रबन्धानकर्ता से किया जाएगा।

(ब) अधिनिवेदन के अवलंबित उपबंध और प्रबन्धान की प्रकृति “सिविज” वा “आपराधिक”;

(ग) अधिकरित प्रबन्धान का गठन करने वाले माध्वार और तात्त्विक तत्त्व जिनमें अधिकरित प्रबन्धान की तारीख भी सम्मिलित है, विगतों में विवरण, क्रमानुसार संज्ञाकित करते हुए, समर्वक प्रस्तावेभेजों वा उनके बूस की प्रकाशित/फोटोस्टेट (प्रनुप्रबन्धान), प्रतिवेदों के बाबत;

(घ) धर्मिकरण के ईक्षित आवेदन की प्रकृति;

(ङ) यदि उसके द्वारा तामान तत्त्वों पर कोई वाचिका गढ़े को मई है तो उसके बारे, विविधियाँ और परिणाम;

(च) वाचिका ऐसे अपन-पन से लम्बित होंगी जिसमें निर्भर किए गए तथ्य सत्त्वापन किए गए हों जिवाए उन प्रस्तावों के जो महा-माध्वाचारी या महा-वाचिकिट्टन्या अपर महा-मालिनिट्टर द्वारा किए गए हों;

(क) प्रत्येक वाचिका, वाची और उनके प्रसिद्धता, यदि कोई हो, द्वारा दृष्टान्तित होगी और उसमें स्वान और तारीख भी वर्णित होंगे;

(ज) प्रारूप प्रमार पूरक कागज में संलग्न किए जाएंगे;

(क्ल) लिखित प्रबन्धान की दशा में, ऐसे अधिकरित निर्णय, डिप्री, प्रादेश, रिट पा परिवर्तन, जिसकी प्रवक्ता की गई है, की प्रबन्धान प्रति वाचिका के साथ काहल की जाएगी;

(ग्ल) वाची यदि अपने कब्जे या जक्षित के अधीन किसी अन्य दासावेज़/प्रस्तावेजों पर निर्भर करता है तो उन्हें वाचिका के साथ काहल करेगा;

(2) अधिनियम की धारा 14 में निविष्ट प्रबन्धान से भिन्न अधिकरण के “आपराधिक प्रबन्धान” की दशा में, वाची कार्यत करेगा कि उसने महा-न्यायाचारी या महासालिनिटर या अपर महा-मालिनिट्टर से सहमति प्राप्त करती है या नहीं और यदि हाँ तो वह उसे प्रस्तुत करेगा और यदि नहीं है तो उसके कारण बताएगा;

(3) वाची, वाचिका के उपर्योगों सहित तीन पूरे सेट, सम्यक रूप से अनुक्रमणिकाकृत और पृष्ठ संख्याकृत अभिलेख परितक । के

रूप में काहल करेगा। जहाँ प्रत्यर्थियों की संख्या एक से अधिक है, वहाँ उसी संख्या में अतिरिक्त अभिलेख पुस्तिका काहल की जाएगी।

(4) वाचिका या कार्यवाहिकों में काहल किए गए, किसी दस्तावेज पर कोई फीस नदेय नहीं होगी।

6. संज्ञान करना:—प्रबन्धान के लिए प्रत्येक कार्यवाही ऐसी न्यायपीठ द्वारा प्रधिनियम की धारा 14 के अनुमार कार्यवाही की जाएगी।

परन्तु जहाँ प्रबन्धान, सदस्य/बोर्ड के समक्ष, के उनकी उपस्थिति या गुनवाई के समय किया गया अनिवार्य है, वहाँ उस पर सदस्य/(यों) द्वारा प्रधिनियम की धारा 14 के अनुमार कार्यवाही की जाएगी।

7. कार्यवाही प्रारम्भ करना:—(i) इन नियमों के अनुमार मिलियल प्रबन्धान के लिए की गई प्रत्येक वाचिका की संबोधा रजिस्ट्रार द्वारा की जाएगी, रजिस्ट्री में उसे रजिस्ट्रिकूल और संख्याकृत किया जाएगा और तब उसे न्यायपीठ के समक्ष प्रारंभिक सुनवाई के लिए रखा जाएगा।

(ii) प्रधिनियम के अस्तीन प्रापराधिक प्रबन्धान की कार्रवाई प्रारम्भ करने के लिए इन नियमों के अनुमार आपराधिक प्रबन्धान के लिए की गई प्रत्येक वाचिका और वाचिका से भिन्न प्रत्येक सूचना, रजिस्ट्रार द्वारा संबोधा के पश्चात् प्रधान न्याय पीठ की दशा में, पहले प्रशासनिक पथ में आयोग के समक्ष और आयोगीयों की दशा में संबंधित उपायथय या ऐसे प्रत्यय सदस्य जो उसके द्वारा इसे प्रयोजनार्थ पदामिहित किया गया हो के समक्ष रखी जाएगी और यदि वह उस प्रधिनियम के अधीन कार्रवाई करने के लिए सभी अधीन और उचित समझता है तो उक्त वाचिका या सूचना रजिस्ट्री में रजिस्ट्रिकूल और संख्याकृत की जाएगी और तब उसे प्रारंभिक सुनवाई के लिए न्यायपीठ के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा।

(iii) जब स्प्रेक्ट्रा से कार्रवाई की जा रही हो, तब अधिकरित प्रबन्धान गठित करने वाले, तथ्यों का विवरण और प्रारूप प्रमारों की प्रति तैयार की जाएगी और प्रारंभिक सुनवाई के लिए प्रस्तुत किए जाने से पहले रजिस्ट्रार द्वारा उस पर हस्ताक्षर किए जाएंगे।

3. प्रारम्भिक सुनवाई और नोटिस:—(i) यदि न्यायपीठ का यह समाधान हो जाता है कि प्रथम वृष्ट्या मामला बन गया है तो वह प्रत्यक्षी की नोटिस जारी करने का निर्देश दे सकेंगी, अन्यथा वह वाचिका की गण्डी और उपर्युक्त वर्तमान नाम करना चाहेगी।

(ii) नोटिस प्रकृति सं. 1 में होगा और उसके साथ वाचिका या सूचना की प्रति और उपर्युक्त यदि कोई हो, संलग्न किए जाएंगे।

(iii) नोटिस की आमील, केंद्रीय प्रशासनिक अधिकरण (प्रतिया) नियम, 1987 में विनियोग रीति से या ऐसी भव्य रोति से जो न्यायपीठ द्वारा निर्देशित की जाए, की जाएगी।

9. हाजिरी के लिए बाध्य करना:—(1) प्रधिकरण, यदि उसके पास यह विश्वास करने का कारण है कि प्रत्यक्षी करार है या नोटिस की तारीख से बाले रहा है या नोटिस के अनुसरण में व्यक्तिगत रूप से उपसंजात होने में असफल रहा है तो वह एक या अधिक पुलिस प्रधिकारियों को सम्बोधित करते हुए उसकी विरक्तारी के लिए जमानतीय या भ्रजमानतीय बारंट जारी करने का निरेश दे सकेगा या ऐसे व्यक्ति की सम्पत्ति की कुक्की का आदेश कर सकेगा ऐसे बारंट और कुक्की—वादेश रजिस्ट्रार के हस्ताक्षर के प्रधीन जारी किए जाएंगे।

गोसा बारंट प्रकृति सं. 2 में होगा और जहाँ तक हो सकेगा इसका निष्पादन संहिता के प्रधीन बारंट के निष्पादन के लिए उपर्युक्त रीति से किया जाएगा।

(2) बारंट का निष्पादन ऐसे अधिकारी या अधिकारियों द्वारा किया जाएगा जिन्हें यह निर्देशित है। 6सका निष्पादन किसी ऐसे पुलिस अधिकारी द्वारा भी किया जा सकेगा जिसका नाम बारंट पर किसी ऐसे अधिकारी द्वारा पृष्ठाकृत किया गया है जिसे वह बारंट निर्देशित या पृष्ठाकृत है।

(III) प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को, जिसे गिरफ्तार किया और निरुद्ध रखा गया है, यदि उसे गिरफ्तारी के छोरों घटे के भीतर जिसमें गिरफ्तारी के स्थान से अधिकरण तक की यात्रा के लिए आवश्यक समय समिक्षित नहीं है, अधिकरण के समक्ष वेश नहीं किया गा मकता है, तो उसे उच्च अद्यत्रि के भीतर, किसी निकटनम मजिस्ट्रेट के सभव वेश किया जाएगा, जो निरोध को उस समय तक प्राप्तिकृत कर सकेगा जब तक कि ऐसा व्यक्ति अधिकरण के समक्ष वेश नहीं किया जाना है।

(IV) प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को, जिसे गिरफ्तार किया और निरुद्ध रखा गया है, जब अधिकरण के समक्ष वेश किया जाता है तो उसे प्रतिश्वति रहित या बिना प्रतिश्वति के ऐसे धनराशि जो अधिकरण पर्याप्त समझे, के बंधपत्र के विश्व जमानत पर इस शर्त के साथ निर्मुक्त किया जाएगा कि इस प्रकार निर्युक्त व्यक्ति, बंब पत्र में उल्लिखित समय और स्थान पर अधिकरण में उपस्थित होगा और तब तक उपस्थित होना रहेगा जब तक कि अधिकरण द्वारा अन्यथा निवेश न दिया जाए।

परन्तु यह कि अधिकरण, यदि वह उचित समझे, ऐसे व्यक्ति को उसकी हाजिरी के लिए, उसमें जमानत लेने की प्रोक्षा उसे वैयक्तिक बंधपत्र पर निर्मुक्त कर सकेगा। महिला के उद्देश्य, जहां तक हो सके, इन नियमों के अधीन की गई सभी गिरफ्तारियों और निधानित बंधपत्रों को लागू होंगे।

10. प्रत्यर्थी की उपसंजाति:—जब तक कि अधिकरण द्वारा अन्यथा प्रादेश न दिया जाए, इन नियमों के अधीन जह कभी छोई मोटिस जारी किया जाता है तो प्रत्यर्थी “आपराधिक अवमान की दशा” में अधिकारण रूप से और “मिलियल अवमान की दशा” में व्यक्तिनात रूप से या अधिकरण के माध्यम से नोटिस में विनियिट स्थान और समय पर उपसंजात होगा और वह दोसों सभी पश्चानतरी तारीखों को, जिन पर याचिका सुनवाई के लिए लागू होती है, उपस्थित होता रहेगा।

11. प्रत्यर्थी द्वारा उत्तर:—प्रत्यर्थी सम्पर्क रूप से शपथ पक्ष द्वारा समिप्त अपनी उत्तर सुनवाई की पहली तारीख या उसमें पहली या उस विस्तारित समय के भीतर जो अधिकरण द्वारा अनुकूल किया जाए, फाइल कर सकेगा।

12. अधिकरण द्वारा प्रतिवाद किए जाने का प्रधिकार:—ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को, जिसके विश्व, इस प्रधिनियम के अधीन कार्यवाही आरंभ की जा रही है, अपने अनुवाद के प्रधिकरण द्वारा, प्रतिवाद किए जाने का प्रधिकार होगा।

13. मामले की सुनवाई और विचारण:—प्रत्यर्थी द्वारा फाइल किए गए उत्तर पर विचार करने और पक्षकारों को सुने जाने के पश्चात, (क) यदि प्रत्यर्थी, यह स्वीकार करने के पश्चात कि उसने अवमान किया है, अर्थात् उसमें याचना करता है, तो अधिकरण ऐसा आदेश पारित करेगा जो वह उचित समझे;

(ख) यदि प्रत्यर्थी यह स्वीकार नहीं करता है कि उसने अवमान किया है, तो अधिकरण;

(i) यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि प्रथम दृष्टया मामला बनता है, तो वह प्रलूप सं III (अधिकरण द्वारा किसी भी समय उपांतरण या परिवर्तन के अधीन रहते हुए) में आरोप तैयार करेगा; या

(ii) यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि प्रथम दृष्टया मामला नहीं जनता है या कार्यवाही करना समीकृत नहीं है तो वह कोई कार्यवाही नहीं करेगा और प्रत्यर्थी को उच्चोचित कर देगा।

(ग) प्रत्यर्थी को विवरित आरोप की एक प्रति दो जाएगी जिसे प्रत्यर्थी को पहकर सुनाया और समझाया जाएगा। इसके पश्चात् अधिकरण उसके अधिकारन को, यदि कोई हो, अभिलिखित करेगा—

(घ) यदि प्रत्यर्थी दोषी होने का अधिकारन करता है तो अधिकरण, उसे दोषी अधिनियमीन करेगा और ऐसा दंडवेश देगा जो वह उचित समझे,

(इ) यदि प्रत्यर्थी दोषी नहीं होने का अभिवक्तन करता है तो मामले पर उसी विन या अधिकरण द्वारा यथा निर्देशित किसी परावातवर्ती तारोंका को विचारण किया जाएगा।

14. कार्यवाही के सचावान में समायन:—प्रत्यर्थी के विश्व कार्यवाही के सचावान में, महान्नायवादी/महामालिमिटर/आर महामालिमिटर या अन्य कोई अधिकरण द्वारा यथा निर्दिष्ट विचारण के लिए आदेश करना है, अधिकरण में उपसंजात होगा और अधिकरण की महामाला करेगा।

15. विचारण के लिए प्रक्रिया:—(i) अधिकारण और इन नियमों में अन्यथा उपबंधित के विवाद, प्रत्येक विवाद के मामलों के विचारण में बाबतुलाल्लाल, सहिता के अध्याय के XXI के प्रश्नोन्नत समिक्षित विचारण के लिए यिन्हिन प्रक्रिया का पालन किया जाएगा ;।

(II) अधिकरण, मविवेकनमार, शास्त्र-पत्र के भूप में साक्ष अस्तुत किए जाने का निर्देश दे सकेगा।

(III) अधिकरण, स्वप्रेरणा से या इस प्रोजेक्ट के लिए किए वह प्रस्ताव पर ऐसे व्यक्ति हो, जिसका लापत्र-पत्र, इस मामले में कारबूल किया गया है, प्रतिपरीक्षा के लिए हाजिरी का आदेश कर सकेगा।

(IV) अधिकरण, स्वविवेक से किसी भी व्यक्ति की अधिकरण के साथी के रूप में परीक्षा के लिए निवेश दे सकेगा।

(V) अधिकरण, साक्षी के रूप में किसी व्यक्ति की परीक्षा के लिए उसकी हाजिरी और किसी वस्त्रावेद के प्रक्रोक्टर वा अस्तुतिकरण की सुनिश्चित करने के प्रयोजन के लिए, जैव वह उचित अवधि, आदेश कर सकेगा।

16. मालिकों के अवधि:—(i) यहां अधिकरण द्वारा, किसी व्यक्ति की अधिनियम के अधीन निसी कार्यवाही में वाक्षी के कर में उपसंजात होने के लिए समन किया जाता है, यहां अधिकरण द्वारा व्यावरवालित ऐसे साक्षी के अवधि उस पक्ष द्वारा बहुत किये जाते हैं विवेके लाल वाक्षी के रूप में हल्ला किया है।

(ii) यहां अधिकरण, पक्षकारों द्वारा संवेद किये गए व्यक्तियों के मिल किसी साक्षी के समन करना है, यहां अधिकरण द्वारा यथा अवश्यित उसका अवधि रजिस्ट्रार द्वारा आकस्मिक व्यव निविल से संबल किया जाएगा।

17. दंडवेश का निष्पावन:—(i) यदि प्रत्यर्थी दोषी यादा यादा है और उसे अधिकरण के उठने तक के कारबाह से मिल कारबाह का दंडवेश दिया जाता है तो उसकी सुनवाई भी और विवाद का बारट ब्रेक सं. IV में रजिस्ट्रार के हस्ताभर के प्रयोग लैवार दिया जाएगा। ऐसा प्रत्येक बारट तब तक प्रवृत्त रहेगा जब तक इसका निवाल नहीं कर दिया जाता या अधिकरण के आदेश द्वारा इसे एह नहीं कर दिया जाता।

प्रावेश में विलिंग्टन जेल अधीक्षक, बारट के मनुसरल में, उसमें विनिर्विट अवधि तक अधिकरण द्वारा दिए जाने वाले अवधि निवेश के अधीन रहते हुए, अवमान कर्ता को अभिव्यक्ता में निरुद्ध स्वेचा।

(ii) यदि अधिकरण, जुमने का दंडवेश देना है और जुमने की राजि सुनत या अधिकरण द्वारा अनुकूल समय के भीतर मंदस नहीं की जाती है तो रजिस्ट्रार, सहना की द्वारा 421 में उपबंधित रेलिको में से किसी भी रीति से कार्यवाही करेगा।

(iii) उपनियम (ii) के अवीन बारट, ब्राविल्लि, ब्रूप सं. V और प्रलूप सं VI में जारी किया जाएगा।

(4) जेल अधीक्षक या पुलिस अधिकारी या जिला कलेक्टर जिन्हे उपनियम (iii) के अधीन बारट सम्बोधित किया गया हो, की गई कारबाही की रिपोर्ट मामले के प्रमिनेश में फाइल करेगा।

18. आदेशिका का निष्पादन:—अधिकरण द्वारा जारी की गई आदेशिकाएं, अध्ययन विधिविधान के सिवाए, यथास्थिति, पूनिम प्रवीकरण/पुलिम प्रावृक्त डांग निष्पादित की जाएंगी।

19. बंधपत्र के समवहरण संबंधी प्रक्रिया:—यदि प्रत्यर्थी की मनुष्यिति के कारण उसकी उपसंचाति के लिए, विधा गया बंधपत्र समवहरण हो जाता है तो अधिकरण, यथास्थिति, प्रत्यर्थी या प्रतिभूत को अवश्य बैने के पश्चात प्रतिभूति बंधपत्र में उल्लिखित संपूर्ण राशि या उसके किसी भाग को शास्ति के रूप में उद्दिष्ट हो जाएगा और उसके लिए उसके किसी भाग को निवेदा देना जैसे कि यह संहिता के अधीन प्रत्यर्थी प्रतिभूति पर अवधिरेपित जुमानि हो।

20. कार्यवाही के किसी प्रक्रम पर अवधारणा:—(i) यदि कार्यवाही के लिए उसकी अवधारणा को स्वीकार कर जेता है तो आगे की कार्यवाही समाप्त कर दी जाएगी।

21. अवधि:—(i) अधिकरण, मामले की विशिष्टताओं के अनुसार, जैसा उचित समय, अवधि प्रतिभूति करेगा।

(ii) इस प्रकार अधिकारित अवधि को उसी रीति से बदल किया जाएगा जैसा कि संहिता के अधीन अधिरोपित जुमानि को किया जाता है।

22. अधिकरण के अस्ति विधियों का लागू होना:—ऐसे मामलों के संबंध में जो इन नियमों में विशिष्टनया उपवर्धित नहीं है, समय समय पर यथा संशोधित अधिकरण के सुरक्षित नियमों में विहित प्रक्रिया, इन नियमों के अधीन कार्यवाहीयों के यथा-आवश्यक परिवर्तन महित संग्रह होगी।

23. लंबित कार्यवाहीयों को लागू होना:—ये नियम, यावत्तमात्र, लंबित कार्यवाहीयों को लागू होंगे।

[क्रम सं. 1/448/86-जे ए]
डा. सी. बर्मा, रजिस्ट्रार

प्रलेप सं. I

[नियम 8 (ii) वेदे]

प्रत्यर्थी को नोटिस

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण

(व्यायपीठ का नाम)

स्थान

अवधारणा सिविल/प्रापराधिक सं.

याची

बनाम

प्रत्यर्थी

(यहाँ उस अधिकारण का नाम और पता निब्बंदे जिसे नोटिस में जारी जा रहा है।)

धीरे—द्वारा सूचना दी गई है / याचिका काइस की गई है। प्रस्ताव किया गया है कि आप (यहाँ सूचना/याचिका) प्रस्ताव में लगाए गए अधिकारण का सारांश उल्लिखित करें।

और आपके विश्व न्यायालय अवधारण अधिकारण, 1971 के अधीन कार्यवाही करने के लिए याचिका रजिस्ट्रीक्यून की गई है :

आप से तारीख—

जो और ऐसी पश्चान्वर्ती तारीखों पर जिनके लिए कार्यवाही स्थगित की जाती है, जब तक कि अधिकरण द्वारा अध्ययन आदेश न किया जाए, व्यक्तिगत रूप से या सम्प्रकृत रूप से प्राधिकृत अधिकारण* के माध्यम से उपसंचात होने और यह कारण बनाने की प्रवेश की जाती है कि आपके विश्व न्यायालय अवधारण अधिकारण 1971 के अधीन ऐसी कार्यवाही जो उचित समझी जाए, क्यों न की जाए। याज, तारीख—मेरे हस्ताक्षर और अधिकरण की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

मुद्रा

रजिस्ट्रार

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण

*जो लागू न हो, उसे काट दें।

प्राप्तप सं II

[नियम 9(i) वेदे]

गिरफ्तारी का बारंट

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण

(व्यायपीठ का नाम)

स्थान

अवधारणा सिविल/प्रापराधिक सं.

याची

बनाम

प्रत्यर्थी

सेवा में,

(बारंट के निष्पादन के लिए प्राधिकृत किए गए अधिकारियों का नाम, प्रवासियां और पना)

श्री/श्रीमती

नि.

पर अधिकरण के अवधारण का आरोप लगाया गया है। आपको यह निदेश दिया जाता है कि उसके प्रत्येक अधिकारी को परिस्थापन करके इस अधिकरण के समझ प्रस्तुत करें।

इसमें असफल न हों।

(यदि अधिकरण ने जमानीय बारंट जारी किया है तो बारंट पर नियम-सिद्धि पूळाकृति किया जाएगा)

यदि उसके श्री

साथी

(दो प्रतिभूतों के साथ

नारीब

को और उसके पश्चात् तब तक जब तक इस अधिकरण द्वारा अध्ययन निदेश न किया जाए, अधिकरण में उत्त्वित होने के लिए जमानीय देगा है तो उसे निर्वृति किया जा सकता है।

याज, तारीख—मेरे हस्ताक्षर और अधिकरण की मुद्रा के अधीन जारी किया गया।

मुद्रा

रजिस्ट्रार

केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण

प्रृष्ठ सं III

[नियम 13(ख) (i) देखें]

आरोप

केन्द्रीय प्रशासनिक प्रधिकरण

(स्थायीठ का नाम)

स्थान

भ्रमान याचिका सिविल/प्रापराधिक सं

वाची

बनाम

प्रत्यक्षी

केन्द्रीय प्रशासनिक प्रधिकरण स्थायीठ

प्राप श्री— (प्रधिकरित भ्रमान कर्ता का नाम) पर निम्नलिखित आरोप लगाता हैः—

कि आपने तारीख— को बजे— (यहां प्रधिकरित भ्रमान गठित करने वाले तथ्यों का लारांश दे) किया और इस प्रकार हमारे वकान में वारा— (यहां स्थायालय भ्रमान प्रधिकरण, 1971 की सुमित्रा धारा लिखे) के प्रधीन इनीय इप स्थायालय का भ्रमान किया है।

पूर्वोक्त आरोप के निए आपको प्रधिकरण द्वारा विचारण का निरेण दिया जाता है।

स्थानीय सदस्य/यों के हस्ताक्षर

प्रधिकरित भ्रमान कर्ता को आरोप पक्कर सुनाया गया और समझ दिया गया है और उसका प्रधिकरण निम्नलिखित रूप में प्रधिकरित किया गया हैः—

(1) क्या आप आरोप के दोषी होने का प्रधिकरण करते हैं?

उत्तरः

(2) क्या आप को और भी कुछ कहना है?

उत्तर

प्रधिकरित भ्रमानकर्ता के हस्ताक्षर

स्थायीठ पर योग्यीन
स्थानीय सदस्य/यों के हस्ताक्षर

कारागार को सुनुदेंगी का वारट

प्रृष्ठ स IV

केन्द्रीय प्रशासनिक प्रधिकरण

(स्थायीठ का नाम)

स्थान

भ्रमान याचिका सिविल/प्रापराधिक सं

वाची

बनाम

प्रत्यक्षी

सेवा में

प्रधीकरण

(जेन का नाम)

स्थान

यह कि देश प्राधिकरण— स्थायीठ
ने आज तारीख— को श्री—

(भ्रमान कर्ता का नाम/बर्णन) को प्रधिकरण की जान बूझकर भ्रमान करने का दावे स्थायानिधित किया है और उसे प्रधिकरण के लिए (यहां प्रधिकरण विनिविष्ट करे) साधारण कारावास भोग्यान का दरारेख दिया है।

अतः आप श्री— जैल के प्रधीकरण को प्राप्तिकृत किया जाता है और आप से अपेक्षा की जाती है कि आप उस (भ्रमान कर्ता का नाम) को अपनी अभिभावा में इस वारट के साथ प्राप्त करे और उसे उस कारावास में, उस प्रधिकरण याएँसी प्रधिकरण के लिये जिसे यह प्रधिकरण प्राप्त द्वारा नियत करे और आपको संसूचित करे सुनित रखें।

आपको यह निरेण दिशा जाता है कि इस वारट का इसके निष्पादन की गति को पूछकर द्वारा प्रमाणित करने हुए लोटा दे।

आप को यह भी निरेण दिशा जाता है कि आप जब तक उस आपका अभिभावा में है उसके श्री— को इस प्रधिकरण द्वारा विनिविष्ट सभी समयों पर प्रधिकरण के समक्ष प्रस्तुत करें।

आज, तारीख— को मेरे हस्ताक्षर और प्रधिकरण की मुद्रा के प्रधीन जारी किया गया।

मुद्रा

रजिस्ट्रार

केन्द्रीय प्रशासनिक प्रधिकरण

चल सम्पत्ति को कुर्की का वारट

प्रृष्ठ स V

[नियम 17(iii) और (iii) देखें]

केन्द्रीय प्रशासनिक प्रधिकरण

स्थायीठ का नाम

स्थान

भ्रमान याचिका सिविल/प्रापराधिक सं

वाची

बनाम

प्रत्यक्षी

सेवा में

(वारट का निष्पादन करने के लिए प्राप्तिकृत किए गए पुलिस इस्टिन्डर या प्रध्य प्रधिकारी का नाम और प्रधिकरण)

केन्द्रीय प्रशासनिक प्रधिकरण ने आज तारीख— का श्री— (भ्रमान कर्ता का नाम और बर्णन) को प्रधिकरण का जान बूझकर भ्रमान करने का दोषी प्रधिनिर्णय किया है और उसे प्रधिकरण के सदाय का बड़ादेश दिया है और क्योंकि उस श्री— (नाम) में यद्यपि उसके जुमाने के सदाय को अपेक्षा को गई थी परन्तु उसके उसी जुमाने या उसके किनां भाग का सदाय नहीं किया है।

आपको प्राप्तिकृत किया जाता है और यह अपेक्षा की जाती है कि आप उस श्री— (नाम) को किसी चल सम्पत्ति का, जिसे के भांति मिले, कुर्के करे और याद ऐसी कुर्की के प्रधान— (अंतिम दिनों और घटी की नस्या निष्क्री) न रहे। राति का सदाय नहीं किया जाता है तो उस कुर्के

बल सम्पत्ति या उसके उन्ने भाग को जिससे उक्त जूमनि का समाधान हो जाए, विक्रम करे और इस बारंट को इसके निष्पादन के तुरन्त पश्चात् ऐसे पृष्ठांकन के साथ कि प्रपत्ते बारंट के अनुसार इसे निष्पादित कर दिया है, बापत करें। आज तारीख— को मेरे हस्ताक्षर और प्रधिकरण की मुद्रा के प्रशीत जारी किया गया।

मुद्रा

रजिस्ट्रार

केन्द्रीय प्रशासनिक प्रधिकरण

जिला कानूनकार्यालय/उप आयुक्त द्वारा कुर्की का बारंट

प्रलम्प नं. VI

(नियम 17(ji) और (iii) द्वारा)

केन्द्रीय प्रशासनिक प्रधिकरण

(प्रायोगिक का नाम)

स्थान

अवमान याचिका सिविल/प्रापराधिक म.

पात्रों

बनाम

प्रत्यक्षी

सेवा में,

जिला कानूनकार्यालय/उप आयुक्त

जिला—

केन्द्रीय प्रशासनिक प्रधिकरण ने आज तारीख— को श्री— (अवमान कर्ता का नाम और वर्णन) को प्रधिकरण का जान बूझकर अवमान करने का दोषी प्रशिनिर्णीत किया है और उसे— गपए जूमनि के संदाय का वंदादेश दिया है और क्षेत्रिक उम्मेद श्री— (नाम) से यद्यपि उक्त जूमनि के संदाय की प्रेषेका को गई थी परन्तु उसने उक्त जूमनि या उसके किसी भाग का नंदाय नहीं किया है।

आपको प्राप्तिकृत किया जाता है और आप से प्रेषेका की जाती है कि आप दंड प्रेक्षा मंडिला, 1973 की धारा 42 द्वारा उपबंधित रीति में पूर्वी 11 प्रत्यक्षी को चर सम्पत्ति या भ्रमन सम्पत्ति या बांदों से मिलिल प्रक्रिया के प्रत्याग्र निष्पादन हार्ग राशि की बमूली करें।

मिलिल प्रक्रिया संहिता, 1908 के प्रयोगसंग यह आदेश डिको और प्राप डिकोवार समझे जाएंगे और यह आवेदन ऐसी डिकी के स्पष्ट में मिष्पादन योग्य होगा।

आज तारीख— को मेरे हस्ताक्षर और प्रधिकरण की मुद्रा के प्रशीत जारी किया गया।

मुद्रा

रजिस्ट्रार

केन्द्रीय प्रशासनिक प्रधिकरण

CENTRAL ADMINISTRATIVE TRIBUNAL

(Contempt of Courts) Rules 1992

NOTIFICATION

New Delhi, the 8th September, 1992

G.S.R. 757(E).—In exercise of powers conferred by Section 23 of the Contempt of Courts Act, 1971 (70 of 1971) read with Section 17 of the Administrative Tribunals Act, 1985 (Act 13 of 1985) and all

other powers enabling it in this behalf and in supersession of all rules on the subject, the Central Administrative Tribunal hereby makes the following rules to regulate the proceedings under the said Act:

1. Short title and Commencement.—(i) These rules may be called 'Contempt of Courts (CAT) Rules, 1992'.

(ii) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions.—In these rules unless there is anything repugnant to the subject or context:—

(a) 'Act' means the Contempt of Courts Act, 1971 (Act 70 of 1971);

(b) 'Code' means the Code of Criminal Procedure;

(c) 'Form' means the form set out in the appendix to these rules;

(d) 'Member' means a Member, whether 'Judicial' or 'Administrative' and includes Vice Chairman and Chairman.

(e) 'Registrar' means Registrar of the Central Administrative Tribunal or its Benches where the contempt proceedings are taken and shall include Joint Registrar and Deputy Registrar, and the Section Officer authorised to discharge the functions of the Registrar;

(f) 'Section' means a section of the Act;

(g) 'Tribunal' means the Central Administrative Tribunal constituted under the Administrative Tribunals Act, 1985 or the Bench thereof, where the proceedings are taken cognizance of;

(h) Words and expression not defined in these rules shall have the same meaning as defined in the Act.

3. Form of Motion.—Every motion for initiating action for contempt of the Tribunal shall be in the form of a petition described as 'Contempt Petition (Civil)' in respect of Civil Contempt and 'Contempt Petition (Criminal)' in respect of Criminal Contempt.

4. Parties to the Proceedings.—The party who presents the petition shall be described as the 'Petitioner' and the alleged contemner shall be described as the 'Respondent'.

5. Contents of the Petition.—The petition shall set out the following particulars:

(i) (a) Name (including as far as possible the name of the father/mother/husband, age) occupation and address of:

(i) the petitioner; and

(ii) the respondent.

If the alleged contemner is an officer, he shall be described by name and designation.

- (b) provision of the Act invoked and the nature of the contempt, 'Civil' or 'Criminal';
- (c) the grounds and material facts constituting the alleged contempt including the date of alleged contempt, divided into paragraphs, numbered consecutively, along with supporting documents or certified[photostat (attested) copies of the originals thereof;
- (d) the nature of the order sought from the Tribunal;
- (e) if a petition has previously been made by him on the same facts, the details, particulars and the result thereof;
- (f) the petition shall be supported by an affidavit verifying the facts relied upon except when the motion is by the Attorney General or the Solicitor General or the Additional Solicitor General;
- (g) every petition shall be signed by the petitioner and his Advocate, if any, and shall show the place and date;
- (h) draft charges shall be enclosed in a separate sheet;
- (i) in the case of 'Civil Contempt' certified copy of the judgment, decree, order, writ or undertaking alleged to have been disobeyed shall be filed along with the petition;
- (j) where the petitioner relies upon any other documents in his possession, or power, he shall file them along with the petition;
- (ii) in the case of 'Criminal Contempt' of the Tribunal other than a contempt referred to in Section 14 of the Act, the petitioner shall state whether he has obtained the consent of the Attorney General or the Solicitor General or the Additional Solicitor General and if so, produce the same, if not the reasons thereof;
- (iii) the petitioner shall file three complete sets of the petition including the annexures in paper book form, duly indexed and paginated. Where the number of respondent's is more than one, equal number of extra paper books shall be filed;
- (iv) No fee shall be payable on a petition or any document filed in the proceedings.

6. Taking cognizance.—Every proceeding for contempt shall be dealt with by a Bench of not less than two Members.

Provided where the contempt is alleged to have been committed in view of, presence or hearing of the Member(s), the same shall be dealt with by the Member(s) in accordance with Section 14 of the Act.

7. Initiation of proceedings.—(i) Every petition for 'Civil Contempt' made in accordance with these rules shall be scrutinised by the

Registrar, registered and numbered in the Registry and then placed before the Bench for preliminary hearing.

- (ii) Every petition for 'Criminal Contempt' made in accordance with these rules and every information other than a petition, for initiating action for criminal contempt under the Act on being scrutinised by the Register shall first be placed on the administrative side before the Chairman in the case of the Principal Bench and the concerned Vice Chairman in the case of other Benches or such other Member as may be designated by him for this purpose and he considers is expedient and proper to take action under the Act, the said petition or information shall be registered and numbered in the Registry and placed before the Bench for preliminary hearing.
- (iii) When suo motu action is taken, the statement of facts constituting the alleged contempt and copy of the draft charges shall be prepared and signed by the Registrar before placing them for preliminary hearing.

8. Preliminary hearing and Notice :—(i) The Bench if satisfied that a *prima facie* case has been made out, may direct issue of notice to the respondent; otherwise, it shall dismiss the petition or drop the proceedings.

- (ii) The notice shall be in Form No. 1 and shall be accompanied by a copy of the petition or information, and annexures if any, thereto.
- (iii) Service of notice shall be effected in the manner specified in the Central Administrative Tribunal (Procedure) Rules, 1987 or in such other manner as may be directed by the Bench.

9. Compelling attendance :

- (i) The Tribunal may, if it has reason to believe, that the respondent is absconding or is otherwise evading service of notice, or has failed to appear in person in pursuance of the notice, direct a warrant, bailable or non-bailable, for his arrest, addressed to one or more Police Officers or may ordered attachment of property belonging to such person. The warrant and the writ of attachment shall be issued under the signature of the Registrar. The warrant shall be in Form No. II and shall be executed as far as may be, in the manner provided for execution of warrants under the Code.
- (ii) The warrant shall be executed by the Officer or Officers to whom it is directed and may also be executed by any other Police Officer whose name is endorsed upon the warrant by the Officer to whom it is directed or endorsed.
- (iii) Every person who is arrested and detained shall, if he cannot be produced before the Tribunal within twenty-four hours of arrest

excluding the time necessary for the journey from the place of arrest to the Tribunal, be produced before the nearest Magistrate within the said period, who may authorise detention till such person is produced before the Tribunal.

(iv) Every person who is arrested and detained when produced before the Tribunal, may be released on bail on a bond for such a sum of money as the Tribunal thinks sufficient with or without sureties, with the condition that the person so released shall attend the Tribunal at the time and place mentioned in the bond and shall continue to so attend until otherwise directed by the Tribunal :

Provided that the Tribunal may, if it thinks fit, instead of taking bail from such person, release him on personal bond for his attendance. The Provisions of the Code shall, so far as may be, apply to all arrests made and bonds executed under the Rules.

10. Appearance of the Respondent : Unless ordered otherwise by the Tribunal, whenever a notice is issued under these rules, the Respondent shall appear in person in the case a 'criminal contempt' and in person or through an Advocate in the case of 'civil contempt', at the time and place specified in the notice and continue to attend on subsequent dates to which the petition is posted.

11. Reply by the Respondent : The Respondent may file his reply duly supported by an affidavit on or before the first date of hearing or within such extended time as may be granted by the Tribunal.

12. Right to be defended by an Advocate : Every person against whom proceedings are initiated under the Act, may as of right be defended by an Advocate of his choice.

13. Hearing of the case and trial : Upon consideration of the reply filed by the Respondent and after hearing the parties:

- (a) if the respondent has tendered an unconditional apology after admitting that he has committed the contempt, the Tribunal may proceed to pass such orders as it deems fit;
- (b) if the respondent does not admit that he has committed contempt, the Tribunal may—
 - (i) if it is satisfied that there is a *prima facie* case proceed to frame the charge in Form No. III (subject to modification or addition by the Tribunal at any time); or
 - (ii) drop the proceedings and discharge the respondent, if it is satisfied that there is no *prima facie* case, or that it is not expedient to proceed.
- (c) the respondent shall be furnished with a copy of the charge framed, which shall be read over and explained to the respondent. The Tribunal shall then record his plea, if any;

- (d) if the respondent pleads guilty, the Tribunal may adjudge him guilty and proceed to pass such sentence as it deems fit;
- (e) if the respondent pleads not guilty, the case may be taken up for trial on the same day or posted to any subsequent date as may be directed by the Tribunal.

14. Assistance in the conduct of proceedings.—The Attorney General|Solicitor General|Addl. Solicitor General, or any other Advocate as may be designated by the Tribunal shall appear and assist the Tribunal in the conduct of the proceedings against the respondent.

15. Procedure for trial.—(i) Except as otherwise provided in the Act and these rules, the procedure prescribed for summary trials under Chapter XXI of the Code shall as far as practicable be followed in the trial of cases for contempt.

(ii) The Tribunal may, at its discretion, direct that evidence be produced in the form of affidavits.

(iii) The Tribunal may, either *suo motu* or on motion made for that purpose, order the attendance for cross-examination of a person whose affidavit has been filed in the matter.

(iv) The Tribunal may, at its discretion, direct any person to be examined as Tribunal witness.

(v) The Tribunal may make such order as it deems fit for the purpose of securing the attendance of any person to be examined as a witness and for discovery or production of any document.

16. Expenses of witnesses.—(i) Where any person is summoned by the Tribunal to appear as a witness in any proceedings under the Act, the expenses of such witness as may be determined by the Tribunal shall be borne by the party who has cited him as a witness.

(ii) Where the Tribunal summons any witness other than the witnesses cited by the parties, his expenses as determined by the Tribunal shall be paid by the Registrar from the funds for contingencies.

17. Execution of sentence.—(i) If the respondent is found guilty and is sentenced to imprisonment other than imprisonment till rising of the Tribunal, a warrant of commitment and detention shall be made out in Form No. IV under the signature of the Registrar. Every such warrant shall remain in force until it is executed or cancelled by order of the Tribunal. The Superintendent of Jail specified in the order shall, in pursuance of the warrant, detain the contemner in custody for the period specified therein subject to such further direction as the Tribunal may give.

(ii) When the Tribunal awards a sentence of fine and the fine amount is not paid at once or within such time as may be granted by the Tribunal, the Registrar shall take action in any one of the ways provided in Section 421 of the Code.

(iii) Warrants to be issued under sub-rule (ii) shall be in Form No. V and VI, as the case may be.

(iv) The report of the action taken by the Superintendent of the Jail or the Police Officer or District Collector to whom the warrant under sub-rule (iii) might have been addressed shall be filed in the records of the case.

18. Execution of processes.—Processes issued by the Tribunal shall, except as otherwise specifically provided, be executed by the Superintendent of Police Commissioner of Police, as the case may be.

19. Procedure on forfeiture of the Bond.—If any bond given for appearance of the Respondent is forfeited due to his absence, the Tribunal may, after giving opportunity to the Respondent or the surety, as the case may be, levy the whole or any part of the amount mentioned in the surety bond, as penalty and direct the same to be recovered as if it were a fine imposed on the Respondent/surety under the Code.

20. Apology at any stage of the proceedings.—

(i) If at any time during the pendency of the proceedings, the contemner tenderers an apology, the same shall be placed expeditiously for orders of the bench.

(ii) If the Tribunal accepts the apology, further proceedings shall be dropped.

21. Costs.—(i) The Tribunal may award costs as it deems fit in the circumstances of the case.

(ii) The costs so awarded shall be recovered in the same manner as a fine imposed under the Code.

22. Application of other Rules of the Tribunal.—In matters not specifically provided for in these rules, the procedure prescribed in the relevant rules of the Tribunal as amended from time to time shall mutatis mutandis apply to proceedings under these rules.

23. Application to pending proceedings.—These rules shall as far as practicable to pending proceedings.

[Sl. No. 1/46/86-JA]

D. C. VERMA, Registrar

FROM NO. 1.

[See Rule 13 (b) (i)]

Notice to Respondent

IN THE CENTRAL ADMINISTRATIVE TRIBUNAL

(Name of the Bench)

Place

Contempt Petition Civil/Criminal No. _____

Petitioner _____

Vs.

Respondent _____

(Here mention the name and address of the person to whom notice is being sent).

2270 GI/92-2

Whereas information is laid/a petition is filed/motion is made by _____ that you (here mention the gist of the accusation made in the information/petition/motion)- _____

And whereas a petition has been registered for action being taken against you under the Contempt of Courts Act, 1971;

You are hereby required to appear in person or through a duly authorised advocate* on day of at and on subsequent dates to which the proceeding are adjourned, unless otherwise ordered by the Tribunal, and show cause why such action as is deemed fit under the Contempt of Courts Ad., 1971 should not be taken against you.

Given under my hand and the seal of this Tribunal, this day of 19.....

Seal

Registrar

Central Administrative Tribunal

*Strike off whichever is not applicable.

FROM NO. II

[See Rule 9(i)]

Warrant of Arrest.

IN THE CENTRAL ADMINISTRATIVE TRIBUNAL

(Name of the Bench)

Place.

Contempt Petition Civil/Criminal No. _____

Petitioner : _____

Vs.

Respondent : _____

To

.....
.....

(Name, designation and address of the Officer/s authorised to execute the warrant).

Whereas Shri/Smt. of is charged with committing contempt of the Tribunal, you are hereby directed to arrest the said and to produce him/her before this Tribunal.

Herein fail not.

(If the Tribunal has issued a bailable warrant, the following endorsement shall be made on the warrant).

If the said shall give bail in the sum of Rs. with one surety in the sum of Rs. (or two sureties each in the sum of Rs.) to attend before this Tribunal on the day of 19... and to continue so to attend until otherwise directed by this Tribunal, he may be released.

Given under my hand and the seal of the Tribunal this day of 19
Seal.

Central Administrative Tribunal
Registrar

FROM NO. III

[See Rule 13 (b) (i)]

CHARGE

IN THE CENTRAL ADMINISTRATIVE
TRIBUNAL

(Name of the Bench) Place.

Contempt petition Civil/Criminal No.-----

Petitioner : -----

Vs.

Respondents :

Central Administrative Tribunal Bench
hereby charges you (name of the
alleged contemner) as under :

That you, on or about day of
at (here give the gist of the material
..... allegedly constituting contempt) and thereby
committed the contempt of this Tribunal punishable
under Section (here give the
relevant section of the Contempt of Courts Act,
1971), within our cognizance.

You are hereby directed to be tried by this Tribunal for the aforesaid charge.

Signature of the Hon'ble member/s

The charge was read over and explained to the
alleged contemner and his plea was recorded as
under :

(1) Do you plead guilty to the charged?

Answer :

(2) Do you have anything else to say?

Answer :

Signature of the alleged contemner

Signatures of the Hon'ble
Member/s presiding over
the Bench.

WARRANT OF COMMITMENT TO PRISON

FORM NO. IV

[See Rule 17(i)]

(Name of the Bench) Place

Contempt petition Civil/Criminal No.-----

Petitioner : -----

Vs.

Respondent/s :

To

The Superintendent
(Name of the Jail)
place.

Whereas the Central Administrative Tribunal
Bench has on this day of adjudged
..... (name/description of the contemner) guilty
of wilful contempt of the Tribunal and sentenced to
undergo simple imprisonment for (here
specify the term) and/or to pay a fine of Rs.
and in default of payment of fine to undergo simple
imprisonment for (specify the
period).

This is to authorise and require you, the Superintendent of the Jail, to receive the said (name of the contemner) into your custody, together with this warrant and keep him safely in the said jail for the said period or for such period as may hereinafter be fixed by the order of this Tribunal and intimated to you. You are directed to return this warrant with an endorsement certifying the manner of its execution.

You are further directed that while the said is in your custody, produce the said before this Tribunal at all times when the Tribunal so directs.

Given under my hand and seal of the Tribunal
this day of

Seal.

Registrar

Central Administrative Tribunal

WARRANT FOR ATTACHMENT OF MOVEABLES

FORM NO. V

[See Rule 17 (ii) & (iii)]

IN THE CENTRAL ADMINISTRATIVE
TRIBUNAL

(Name of the Bench) Place

Contempt Petition Civil/Criminal No.-----

Petitioner : -----

Vs.

Respondent : -----

To

.....

.....

(Name and designation of the Police Officer or other
officer authorised to execute the warrant).

Whereas the Central Administrative Tribunal on
(this day) has adjudged (name and description of the
contemner) guilty of wilful contempt of Tribunal and
sentenced to pay a fine of Rs. and
whereas the said (name) although required
to pay the said fine has not paid the same or any
part thereof.

This is to authorise and require you to attach any moveable property belonging to the said.....(name) which may be found within the district of...and if within.....(state the number of days or hours allowed) next after such attachment, the said sum shall not be said to sell the moveable property attached or so much thereof, as shall be sufficient to satisfy the said fine, returning this warrant, with an endorsement certifying that you have done under it, immediately upon its execution.

Given under my hand and the seal of the Tribunal this.....day of.....19.....
Seal.

Registrar
Central Administrative Tribunal.

**WARRANT OF ATTACHMENT BY DISTRICT
COLLECTOR|DY. COMMISSIONER**

FORM NO. VI

[See Rule 17 (ii) & (iii)]

**IN THE CENTRAL ADMINISTRATIVE
TRIBUNAL**

(Name of the Bench) _____ Place _____
Contempt Petition Civil|Criminal No. _____
Petitioner _____
Vs. _____
Respondent _____

To

The District Collector|Dy. Commissioner
.....District.

Whereas the Central Administrative Tribunal on (this day) has adjudged (name and description of the contemner) guilty of wilful contempt of Tribunal and sentenced to pay a fine of Rs._____ and whereas the said.....(name) although required to pay the said fine has not paid the said fine|the sum ofbeing the part thereof.

This is to authorise and require you to realise the amount by execution according to civil process against the moveable or immovable property or both of the respondent aforesaid in the manner provided by Section 421 of the Code of Criminal Procedure, 1973.

This order shall be deemed to be a decree and you the decree holder within the meaning of the Code of Civil Procedure, 908 and the order shall be executable as such decree.

Given under my hand and the seal of this Court, this.....day of.....19.....

Seal. _____ Registrar
Central Administrative Tribunal

